

पाठ्य पुस्तकों में समाहित मूल्य (पर्यावरण संरक्षण एवं स्वच्छता)

स्वच्छता,.....

मानव जीवन के लिए स्वच्छता बहुत आवश्यक है। गंदगी तथा कचरे से अनेक प्रकार की बीमारियां हो जाती हैं। स्वच्छता के अभाव में बच्चे जवान और वृद्ध बीमारियों से ग्रस्त हो सकते हैं जिससे उनके शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। इन सभी प्रतिकूल परिस्थितियों से बचने के लिए और बीमारियों से निपटने के लिए स्वच्छता की बहुत आवश्यकता होती है।

स्वच्छता का अर्थ....

सभी प्रकार की गंदगी को दूर कर निरोग एवं आरामदायक जीवन जीना स्वच्छता है। मानव जीवन मूल्यों में एक मूल्य स्वस्थ रहना भी है स्वच्छता भारतीय संस्कृति का प्रतीक है।

भारतीय दर्शन में शरीर आत्मा मन बुद्धि व पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है।

स्वच्छता का सामान्य आशा उन प्रावधानों सुविधाओं और सेवाओं से है जो मानव के मल मूत्र और कचरे का सुरक्षित इस कारण करते हैं।

स्वच्छता का महत्व.....

मानव जीवन मूल्यों में एक मूल्य स्वस्थ रहना भी शामिल है स्वच्छता भारतीय संस्कृति का प्रतीक है भारतीय दर्शन में शरीर आत्मा मन बुद्धि तथा पर्यावरण को शुद्ध रखना मानव जीवन का महत्वपूर्ण कार्य बताया गया है स्वच्छता पूर्ण रूप से एक बड़ा विचार है।

कचरा यागंदगी का पैदा होना वर्तमान में एक मुख्य समस्या बन गई है मानव द्वारा स्वच्छता रखने से कचरे और गंदगी का निस्तारण तो होता ही है साथ में अन्य प्रकार की बीमारी व संक्रामक रोगों से मुक्ति मिल जाती है उसका से हानिकारक जीवाणु और विषाणु उत्पन्न नहीं होता जिससे बीमारियों के फैलने पर रोक लग जाती है स्वच्छता के कारण मानव में रोग प्रतिरोधक क्षमता के विधि होती है जिससे उसकी औसत आयु बढ़ती है स्वच्छता से पर्यावरण दशाएं अनुकूल बनी रहती हैं किसी भी प्रकार का पर्यावरण प्रदूषण स्वच्छता से नियंत्रित हो जाता है स्वच्छता से शरीर शुद्ध रहता है जिससे बौद्धिक विकास होता है। स्वच्छ पर्यावरण में खाद्य जाल एवं खाद्य श्रृंखला भी संतुलित बनी रहती है उपरोक्त सभी कारणों से हमारे जीवन में स्वच्छता का बहुत ही और महत्वपूर्ण स्थान है।

: स्वच्छता के प्रकार...स्वच्छता को मुख्यतः तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं।

व्यक्तिगत स्वच्छता

आसपास अथवा घर में स्वच्छता

पर्यावरण की स्वच्छता

1.व्यक्तिगत स्वच्छता-इसके अंतर्गत स्वयं के शरीर की स्वच्छता आती है। सफलता बोलना दौड़ना सीख जाता है और यदि उसे बढ़ावा दिया जाए तो वह बहुत आसानी से स्वच्छता संबंधी आदतों को बचपन से ही ग्रहण कर लेता है।

इसके अंतर्गत समाहित है...

A.हाथ धोना

B.मुंह की स्वच्छता

C.नहाना

D.बालों की देखभाल

E.पैरों की स्वच्छता

F.शौच के दौरान स्वच्छता

G.खांसी और छिकने के दौरान स्वच्छता

H.नाखूनों के स्वच्छता

2. आसपास अर्थात घर की स्वच्छता...

इसके अंतर्गत अपने घर में रखी जाने वाली स्वच्छता आती है इसे भी हम अपनी आदत में विकसित कर सकते हैं। इसके अंतर्गत आते हैं।

A.रसोई में स्वच्छता

B.कमरों की तथा बिस्तर की स्वच्छता

C.बाथरूम की साफ स्वच्छता

D.घर के फर्श तथा दीवारों की स्वच्छता

E. गमले और पेड़ पौधे हैं तो उनके आसपास स्वच्छता

F.घर में इस्तेमाल होने वाले इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे फ्रिज,वाशिंग मशीन,पंखे ओवन, मिक्सी,की स्वच्छता

G.घर की छत की स्वच्छता

3.पर्यावरण की स्वच्छता.... स्वच्छता और पर्यावरण में प्रत्यक्ष संबंध है स्वच्छता की स्थिति में पर्यावरणीय स्थिति विपक्ष व स्वस्थ रहेगी।आज पर्यावरण की समस्या

एक वैश्विक समस्या बनी हुई है। स्वच्छता के कारण पर्यावरण के लिए खतरा पैदा हुआ है। नगरीय व ग्रामीण समाज में स्वच्छता के प्रति कम जागरूकता से पर्यावरणीय विविध पहलू प्रभावित हुए हैं। जल, वायु, मृदा आदि से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। जंगलों की कटाई, अनियंत्रित यातायात, प्लास्टिक का बहुत उपयोग, विभिन्न रासायनिक उद्योग के कारण पर्यावरण में असंतुलन पैदा हुआ है जिसका सीधा प्रभाव जनजीवन पर लक्षित है। स्वच्छता व पर्यावरण सामाजिक आयाम है, जो समाज को सीधे प्रभावित करते हैं।

पर्यावरण शब्द का अर्थ है हमारे चारों ओर का वातावरण। परी का अर्थ होता है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ वातावरण से है।

पर्यावरण की स्वच्छता अर्थात् पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारों ओर के वातावरण को संरक्षित करें तथा उसे जीवन के अनुकूल बनाएं पर्यावरण और प्राणी एक दूसरे पर आश्रित होते हैं।

जल थल वायु अग्नि आकाश इन्हीं पांच तत्वों से मनुष्य का जीवन है प्रकृति के बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है मानव जीवन प्रकृति पर पूर्ण रूप से आश्रित होता है प्रकृति एक विराट शरीर की तरह है जीव जंतु वृक्ष वनस्पति नदी पहाड़ आदि उसके अंग प्रत्यंग हैं इसके परस्पर सहयोग से ही यह वृहद् शरीर स्वस्थ और संतुलित है जिस प्रकार मानव शरीर में किसी अंग में खराबी आ जाने पर पूरे शरीर में बाधा पड़ती है उसी प्रकार प्रकृति के घटकों से छेड़छाड़ करने पर प्रकृति की व्यवस्था भी गड़बड़ा जाती है।

पर्यावरण के मुख्य अत्याचार घटक होते हैं।

1.स्थल मंडल

2.जलमंडल

3.वायुमंडल

4.जीवमंडल

: पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता...

प्राणी अपने जीवन हेतु वनस्पति जगत पर आश्रित है मनुष्य तथा अधिकांश जीव जंतु हवा में उपस्थित ऑक्सीजन को स्वास द्वारा ग्रहण करके जीवित रहते हैं पेड़ पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया में ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं इस तरह मनुष्य के जीवन का आधार पेड़ पौधे ही उसे प्रदान करते हैं।

जीव जंतु और मनुष्य सभी अपना भोजन पेड़ पौधों से ही प्राप्त करते हैं वनस्पति ही पोषण प्रदान करती है इसलिए भी पर्यावरण संरक्षण बहुत ही जरूरी हो जाता है।

वृक्ष वायु शोधन तो करते ही हैं साथ ही तापमान को भी नियंत्रित करते हैं इसलिए उनका संरक्षण जरूरी है इन के नष्ट होने से ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्या उत्पन्न हो जाएगी।

वृक्ष ईंधन व इमारती लकड़ी से लेकर फल फूल पत्तों से मिलने वाली खाद आदि प्रदान करते हैं।

वृक्ष जंगलों में पक्षियों जानवरों आदि को आज तक प्रदान करते हैं।

वृक्ष भूमि के कटाव को रोकने में सहायक होते हैं।

वृक्षों से विभिन्न प्रकार की औषधि मिलती है इसलिए भी इनका संरक्षण बहुत ही आवश्यक हो जाता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जाने वाले उपाय....

इसके मुख्य तीन उपाय हैं

1. कम उपयोग करना

2. पुनरावृत्ति करना

3. पुनः उपयोग करना

लगभग सभी चीजों की पुनरावृत्ति की जा सकती है ऐसे उत्पादों को खरीदने की कोशिश करें दिन की पुनरावृत्ति हो सकती है कांच कागज प्लास्टिक किया था तो इन सभी चीजों का फिर से इस्तेमाल किया जाता है इसके लिए आवश्यकता होती है जागरूकता की की हम इस तरह के सामान को बाजारों से खरीदें जिन्हें री साइकिल किया जा सके हमें प्लास्टिक की पॉलीथिन या प्लास्टिक से बनी चीजों का उपयोग बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए क्योंकि इनका दोबारा इस्तेमाल नहीं हो पाता है और इनका अपघटन भी नहीं होता है।

इसके अतिरिक्त कुछ और उपाय हैं जिन्हें करके हम पर्यावरण में स्वच्छता बनाए रख सकते हैं और उसका संरक्षण कर सकते हैं

1. पानी की खपत कम करें

2. बिजली का उपयोग आवश्यकता अनुसार ही करें।

3. पेड़ पौधे और वृक्ष अधिक मात्रा में लगाएं तथा इन्हें नष्ट होने और कटने से बचाएं।

4. अपने घरों में ही बिना रासायनिक खाद का उपयोग किए हुए जैविक खाद के उपयोग से फल फूल और सब्जियों को उगाने का कार्य करें।

5.अपने वाहनों की नियमित जांच कराएं जिससे उनमें से धुआं कम निकले वाहनों का प्रदूषित हुआ हमारे पर्यावरण को भी प्रदूषित कर देता है।

अर्चना सिंह
वाराणसी

